शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ४४ : नई दिल्ली : ५-११ फरवरी २०१२

१४८वें मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर
परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा समुच्चारित गीत

मर्यादा गण-नन्दनवन मन्दार है।
श्री जिनशासन सन्तो! सतियो! हम सबका आधार है।
भैक्षव शासन सन्तो! सतियो! हम सबका आधार है ॥

आत्म साधना लक्ष्य हमारा सदा पुष्टतम बना रहे।
'एगप्पमुहे' बनकर चेतन निर्मलता से सना रहे।
शुद्ध निर्जरा भाव साधना सार है ॥१॥

संघ हमारा संरक्षक उपकारी त्राण शरणदाता।
आध्यात्मिक पथदर्शक सम्प्रेरक कष्टातप से छाता।
धर्मसंघनिष्ठा पावन उपहार है ॥२॥

आज्ञा रक्षाकवच हमारा पूर्ण समर्पण आणा पर।
किंचित् कष्ट झेलकर भी गुरुआज्ञा पालन रहे प्रवर।
आज्ञानिष्ठा शासन का शृंगार है ॥३॥

प्रतनुकषाय बनें हम सारे, निश्चित ही यह श्रेयस्कर।
रहे विमलता आचरणों में, जन्म-जन्म में क्षेमंकर।
धन्य साधु वह शुभ जिसका आचार है ॥४॥

मर्यादा पालन में जागरूकता सबका धर्म है।
श्री भिक्षु स्वामी के शासन में अनुशासन मर्म है।
मर्यादोत्सव की सर्वत्र बहार है।
वर आमेट नगर लगता गुलजार है।
महाश्रमण गुरु वचन निभा निर्भार है।
अब जल्दी ही मरुधर ओर विहार है।
अब जल्दी ही जसवल ओर विहार है ॥५॥

जसवल से गुरुवर तुलसी आमेट नगर में पधराए।
हम आमेट नगर से अब जसवल जाने को उत्साहे।
'महाश्रमण' तुलसी से जुडता तार है।
महाप्रज्ञ गुरु का मुझ पर उपकार है ॥६॥

लय : आने वाले कल की

मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का मंगल उद्‌बोधन

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने सर्वप्रथम आचार्य भिक्षु द्वारा लिखित मूल मर्यादापत्र का वाचन किया। पूज्यवर ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन में कहा--'हाजरी का अप्रतिम और अखंड बोल है--सब साधु-साध्वियां पांच महाव्रत पांच समिति और तीन गुप्ति की अखंड आराधना करें। ये तेरह नियम साधु का आचार है। यह हमारा साधुत्व है, हमारा जीवन है। हमने साधना के लिए घर छोड़ा है, इसकी सतत स्मृति रहनी चाहिए। हमारे सामने मुख्य लक्ष्य यह रहे कि हमारी साधना का विकास हो। हम सभी साधु-साध्वियां सोचें, विचार करें, चिंतन-मनन करें कि मेरी साधना का विकास निरंतर हो रहा है या नहीं। मैं साधु बना हूं या साध्वी बनी हूं, अब मेरा आध्यात्मिक विकास होना चाहिए।

साधना के दो आयाम हैं। पहला आयाम है--कषायों का मंदीकरण। हमारे कषाय मंद हों। राग-द्वेष, क्रोध, मान, माया लोभ और मोह प्रतनु हों, कमजोर बनें, ऐसा हमें सलक्ष्य प्रयास करना चाहिए। साधना का दूसरा आयाम है--निर्धारित उपयुक्त आचार के प्रति जागरूकता। हम साधु-साध्वियों में अपने आचार के प्रति जागरूकता और निष्ठा रहनी चाहिए। जो हमारी आचार की मान्य व्यवस्था है, उसके प्रति हम जागरूक रहें।

मर्यादा पंचक

तेरापंथ शासन में मुख्य रूप से आचार की प्रधानता है, विचार की तो है ही। इस आचार की सुरक्षा के लिए या संगठन की सुरक्षा के लिए पांच महत्त्वपूर्ण मर्यादाएं हैं। तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य मात्र एक होते हैं। उनकी आज्ञा और आदेश को चैलेंज नहीं किया जा सकता। सर्वोपरि आसन पर आचार्य आसीन होते हैं, इसलिए उनकी आज्ञा में सब चलें। साधु-साध्वियां तो चलते ही हैं, श्रावक समाज भी आध्यात्मिक संदर्भों में कुछ सीमा तक आचार्य की आज्ञा में चलता है, आगे बढता है, अपनी साधना करता है। श्रावक-श्राविकाओं के लिए भी ध्यातव्य है कि वे भी कम से कम अध्यात्म के संदर्भ में एक आचार्य की आज्ञा में चलें।

दूसरी मर्यादा है--विहार चतुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें, अपने मन से नहीं। साधु-साध्वियों की यह धारणा रहे कि अपने मन से गुरु का मन ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। संभवतः मंत्री मुनिश्री मगनलालजी का यह कथन है कि गुरु करें वह ठीक। कहां जाना, कहां रहना सब गुरु की इच्छा पर निर्भर रहे। अपने मन की बात को गौण कर गुरु के मन को सबसे ज्यादा महत्त्व दिया जाना चाहिए। अपने मन की बात बता दी, उसके बाद गुरु जो कह दें, वह शिरोधार्य होना चाहिए। इसी प्रकार चतुर्मास कहां करना है? गुरु जहां कहें, वहां करना है। अगर कोई खास कठिनाई न हो तो गुरु ने जहां के लिए कह दिया, उनके वचन को चरितार्थ करने का प्रयास करना चाहिए।

संघ के सब शिष्य-शिष्याएं आचार्य के होते हैं किसी अन्य के नहीं। मैं सोचता हूं, यह मर्यादा देकर स्वामीजी ने हमें निहाल कर दिया। महामना आचार्य भिक्षु ने यह विधान देकर हमें कितना अच्छा रास्ता दिखा दिया। चेला-चेली की आंकाक्षा मत रखो। तुम स्वयं एक गुरु के चेले बने रहो। मेरा तो यह मानना है कि इस धारा या विधान ने हमारे संघ की एकता और अखंडता को बनाए रखने में बहुत योगदान दिया है।

आचार्य योग्य व्यक्ति को दीक्षित करें, अयोग्य को नहीं। हमें मात्र संख्या नहीं बढाना है। हमारे लिए एक नम्बर पर क्वालिटी है, क्वांटिटी नम्बर दो पर है। हमें संख्या से पहले गुणवत्ता देखनी चाहिए।

पांचवीं धारा है कि आचार्य किसी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करें तो सब उसे सहर्ष स्वीकार करें। उत्तराधिकारी बनाना आचार्य का अपना सर्वाधिकार है। जैसे गुरुदेव तुलसी ने महाप्रज्ञजी को अपना उत्तराधिकारी बनाया। यह आचार्य का अपना सर्वाधिकार है कि किसे वे अपना उत्तराधिकार सौंपें। जिसे सौंपें, सब साधु-साध्वियां और श्रावक समाज उसे सहर्ष स्वीकार करें। ये तेरापंथ संगठन को मजबूत बनाने वाली और सुरक्षित रखने वाली मर्यादाएं हैं।

तेरापंथ है सिर का मौर व हृदय हार

अध्यात्म की साधना हमारा मुख्य लक्ष्य है। हमारे मन में शासन के प्रति निष्ठा होनी चाहिए। साधना

की जो संघबद्ध प्रणाली हमने स्वीकार की है, उसके प्रति निष्ठा बहुत आवश्यक है। शासन हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है, बड़ा है। आचार्यों से भी बड़ा शासन है, संघ है। संघपति का बड़ा मूल्य है, किन्तु अगर हम तुलना करें और दार्शनिक या कानूनी दृष्टि से विचार करें तो मैं मानता हूं कि आचार्य से भी बड़ा यह शासन है, संघ है। इसलिए हम इस शासन की सेवा करें। मैं तो सोचता हूं कि यों तो मेरे सामने मानव जाति की बात भी है, जैन शासन भी है। इन सारे संदर्भों में मेरा तो यह सोचना है कि मेरे लिए तो सर्वोपरि तेरापंथ शासन है। तेरापंथ से बड़ा मेरे लिए कोई दूसरा नहीं। मैं और काम भी कर सकता हूं, किन्तु तेरापंथ के अतिरिक्त और किसी दूसरे काम को मैं प्राथमिकता देना नहीं चाहता। सिर का मौर कहूं या हृदय का हार कहूं, मेरे लिए तो यह तेरापंथ शासन ही है। इसलिए हम शासन के भक्त बनें। हालांकि मैं तो औरों का भी भक्त हूं, किन्तु व्यवहार की भूमिका में उतर कर कहूं तो मैं तो तेरापंथ शासन का भक्त हूं, सेवक हूं। हम सभी भैक्षव शासन के भक्त बने रहें, सेवक बने रहें, क्योंकि हमें जो संघ मिला है, उसे मैं बहुत महत्त्वपूर्ण मानता हूं।

गौरवपूर्ण है विनय एवं समर्पण

हमारा धर्मशासन गौरवपूर्ण है, गरिमामय है। मैं देखता हूं हमारे संघ के साधु-साध्वियों की गरिमा है। साध्वीप्रमुखाजी यहां विराजमान हैं, जो गुरुदेव तुलसी के समय से ही संघ की सेवा करती आ रही हैं। पांच सौ से ज्यादा साध्वियों और समणियों की देखरेख का काम करती हैं। ये आचार्यों के प्रति कितनी निष्ठा रखती हैं। यह भी हमारे शासन की एक गरिमा है कि बड़े-बडे साधु-साध्वियां भी शासन को महत्त्व देते हैं, शासनपति की दृष्टि व इंगित को महत्त्व देते हैं। हमारे साधु-साध्वियां बहुत विनीत हैं। इस विनय भाव का हम गौरव अनुभव करते हैं। यहां और बाहर भी कितने साधु-साध्वियां हैं। आप देखें कि एक निर्देश यहां से जाता है तो उस निर्देश की अनुपालना के लिए कितने समर्पित हो जाते हैं, उसे कितना बहुमान देते हैं। वे हमारे इंगित के लिए हाथ जोड़े खड़े रहते हैं, प्रतीक्षा करते हैं कि गुरु का क्या इंगित है, क्या आज्ञा है, क्या अपेक्षा है। उनका यह विनय भाव, समर्पण भाव गौरवास्पद है।

मैं समण श्रेणी को देखूं। हालांकि साधु-साध्वियों से इनकी कुछ भिन्नता है, किन्तु आज्ञा की दृष्टि से देखूं तो प्रायः प्रायः हमारी आज्ञा में हैं। प्रायः शब्द निरवद्यता की दृष्टि से लगा दिया। वे भी कहां जाना, कहां रहना, एक निर्देश की डोर से बंधी रहती हैं। देश-विदेश में प्रवास करते हुए ये भी संघ की बड़ी महत्त्वपूर्ण सेवा करती हैं।

श्रावक-श्राविका समाज को देखता हूं तो वे कौन से कम हैं। इनमें भी कितना विनय व समर्पण का भाव है। इस पर हम सात्विक गौरव की अनुभूति कर सकते हैं। हमें बड़े भाग्य से यह स्थिति मिली है, भिक्षु स्वामी के प्रताप से मिली है। हमारे दसों आचार्यों के श्रम व कृपा का यह फलित है। हमारे पूर्वाचार्यों ने संघ को बढ़ाने में कितना काम किया है, अपनी शक्ति का महनीय योगदान दिया है। हम तो उनके प्रति प्रणत हैं। गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ को हमने देखा। उन्होंने संघ के लिए कितना श्रम किया है। पूर्ववर्ती आठ आचार्यों को हमने देखा तो नहीं, पर वे हमारी परंपरा के महान् आचार्य हैं।

प्रसादामृत मानें गुरु के उलाहने को

हम शासन के प्रति निष्ठा का भाव बनाए रखें। छोटी-मोटी बातों को लेकर कभी भी अस्थिरता नहीं आनी चाहिए। व्यवस्था व पदाकांक्षा की बात को लेकर कभी संघ से पैर बाहर रखने की भावना नहीं आनी चाहिए। हमारी भावना यह रहे--जीएंगे तो संघ में जीएंगे, सौ वर्ष बाद मरेंगे तो संघ में ही मरेंगे। आचार्य कभी उलाहना दें, उसको भी विनय भाव से झेलना चाहिए। गुरु का प्रसादामृत मानकर सहन करना चाहिए। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं को गुरु के उलाहने को कभी भी बुरा नहीं मानना चाहिए, अन्यथा नहीं लेना चाहिए। सब यह सोचें कि कहीं मेरी कोई गलती तो नहीं हुई है? अगर हुई है तो मैं अपनी गलती के परिष्कार का प्रयास करूं। मैं तो यह भी कहता हूं कि कभी-कभी बिना गलती के भी उलाहना आ जाए तो गुरु के प्रति असम्मान का भाव नहीं आना चाहिए। यथार्थ को मौका देखकर निवेदित किया जा सकता है, किन्तु उस उपालंभ को सहज निर्जरा मानकर स्वीकार कर लेना चाहिए।

मेरा यह मानना है कि अनावश्यक खर्च नहीं होना चाहिए। आवश्यक हो तो समाज भले कितना ही खर्च करे, कोई बुरी बात नहीं, पर अनावश्यक खर्च नहीं होना चाहिए। यात्रा में, जुलूस हो, उसमें हाथी, घोड़ा, बैंड बाजा आदि की जरूरत नहीं। फर्रियां लगाना और हमारे ठिकाने पर सजावट की दृष्टि से लाइटिंग आदि नहीं होनी चाहिए। हम साधक हैं, इसलिए हमें तो सादगी पसंद है। हम बाहर के आकर्षणों से बचने का प्रयास करें।

साधु-साध्वियों की भांति आचार्य श्रावक-श्राविकाओं को भी उलाहना दे सकते हैं। यह आचार्य का अधिकार है। आचार्य उलाहना देते हैं तो वत्सलता भी देते हैं। उलाहना मिले तो उसे शालीनता और सम्मान के साथ स्वीकार करना चाहिए। बाइयों से तो काम कम पड़ता है, फिर भी कभी उलाहना मिल जाए तो उसे स्वीकार करना चाहिए। पुरुषों में श्रद्धा है तो बहनों की श्रद्धा भी गौरवास्पद है। पुरुषों से बहनों की श्रद्धा विशेष हो सकती है। बहनों को तो बढ़िया जिकारा मिल जाए तो उनके लिए बात करना जैसा हो जाता है। कितनी श्रद्धा है बहनों में। यह श्रद्धा हमारे संघ की नींव को सींचने वाली है।

महासभा है महत्त्वपूर्ण संस्था

हमारे धर्मसंघ से जुड़ी अनेक केन्द्रीय संस्थाएं हैं। महासभा का कल ही नवनिर्वाचन या नवमनोनयन हुआ है। महासभा हमारे धर्मसंघ की संस्थाओं में एक महत्त्वपूर्ण संस्था है। कई लोग कहते हैं कि महासभा का अध्यक्ष तेरापंथ समाज का प्रथम नागरिक होता है। चैनरूपजी चंडालिया का द्विवर्षीय कार्यकाल संपन्न हुआ है। राजेन्द्रजी बच्छावत आदि कई कार्यकर्ता इनकी टीम में हैं। इन कार्यकर्ताओं में कितना विनय भाव है, कितनी कर्मठता है। बात-बात में गुरु के इंगित को महत्त्व देते हैं। ये लोग सक्षम हैं। आजकल कोई बात होती है, चाहे परिवार हो या अन्य कोई, मैं कहता हूं आप महासभा से बात कर लो, संपर्क कर लो, अमुक व्यक्ति विशेष से कर लो। महासभा पर हमारा विश्वास है। यह कुशल संस्था है। निरवद्य प्रवृत्ति के संदर्भ में मैंने जहां तक देखा, चैनरूपजी व उनकी टीम ने अच्छा काम किया है। चैनरूपजी बड़े विनीत श्रावक हैं। हमारी दृष्टि के अनुरूप कार्य करने का प्रयास किया है। स्थानान्तरण होता है, कोई खास बात नहीं। संघ से, आध्यात्मिकता से जुड़ाव बना रहे। अब नई टीम आई है। हीरालालजी मालू अध्यक्ष और कमलजी दूगड़ चीफ ट्रस्टी बने हैं। अन्य लोग भी इनकी टीम के सदस्य होंगे। ये भी सक्षम लोग हैं। हमारे संघ की गरिमा को बढ़ाने का कार्य करेंगे।

बालपीढ़ी के निर्माण का कार्य है ज्ञानशाला

महासभा की अनेक गतिविधियों में एक है ज्ञानशाला। यह एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति है। यह बालपीढ़ी के निर्माण का कार्य है। मुनिश्री उदितकुमारजी अभी ज्ञानशाला के प्रभारी हैं। बड़े जागरूक और चिंतनशील हैं। ज्ञानशाला पर ध्यान दे रहे हैं। इनके साथ सहप्रभारी मुनि हिमांशुकुमारजी अच्छे कर्मठ संत हैं। ज्ञानशाला से जुड़े प्रशिक्षक व कार्यकर्ता संस्कार निर्माण व ज्ञानदान के रूप में महत्त्वपूर्ण सेवा करते हैं।

उपासक श्रेणी

उपासक श्रेणी भी महासभा की गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। वैसे मुझे तो सब पर ध्यान देना पड़ता है, किन्तु उपासक श्रेणी का जिम्मा वर्षों तक मेरे पास रहा है और अब भी कुछ अंशों में मैं देखता हूं। हमारे मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि योगेशजी कई वर्षों से यह कार्य देख रहे हैं। मैंने कहा कि भाइयों को संत संभालें और बाइयों को साध्वियां संभालें। उपासिकाओं को संभालने का काम साध्वी जिनप्रभाजी और साध्वी शशिप्रभाजी देखती हैं।

पारदर्शिता हो संस्थाओं में

हमारे समाज से जुड़ी संस्थाओं के बारे में मैं सोचता हूं। सामान्य उपदेश की बात है, कोई कमी की बात नहीं करता। समाज की संस्थाओं में ट्रांसपेरेंसी-पारदर्शिता बनी रहे। संस्था के कार्यकलापों में आर्थिक नैतिकता बनी रहे। जहां तक संभव हो सके संस्थाओं के कार्य में, प्रवास व्यवस्था समिति के कार्यों में अशुद्ध पैसा न आए। समाज में यथायसंभव नैतिकता व स्वच्छता बनी रहे।

अच्छा काम करती हैं संस्थाएं

हमारे समाज में तेरापंथ युवक परिषद, महिला मंडल और तेरापंथी सभाएं जैसी संगठनमूलक संस्थाएं हैं। बड़ी अच्छी संस्थाएं हैं। सभी अच्छा काम कर रहे हैं। ये सब समाज से सीधी जुड़ी हुई संस्थाएं हैं और अब तो तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम भी इनमें शामिल हो गया है। जहां तक मैं जान पाया हूं, ये संस्थाएं अपने ढंग से अच्छा काम कर रही हैं। अणुव्रत, प्रेक्षा ध्यान, जीवन विज्ञान आदि हमारी लोक कल्याणकारी गतिविधियां हैं। हमारे अनेक संत इनसे जुड़े हुए हैं। शासनश्री मुनिश्री सुखलालजी वैसे तो कृशकाय संत हैं, लेकिन देखता हूं कि अणुव्रत के लिए ये कितना काम करते हैं और ध्यान देते हैं। स्वास्थ्य की अनुकूलता हो, न हो, पर अणुव्रत के लिए खपने वाले जागरूक और जिम्मेवार संत मुझे लगे। शासनश्री मुनिश्री किशनलालजी को जीवनविज्ञान के लिए कुछ कहना नहीं पड़ता। अपने आप आगे बढ़कर उससे संबंधित दायित्व को ले लेते हैं। जो सेवा करने वाले संत हैं, विनयशील हैं, उनके सामने संबोधन, अलंकरण आदि कोई मायने नहीं रखते। वे तो दृष्टि के आराधक हैं। हर समय कहते रहते हैं जैसी आपकी दृष्टि, आपकी आज्ञा।

इसी तरह हमारी साध्वियां भी कितना काम करती हैं। भले साहित्य का काम हो, महिला मंडल का काम हो, उपकरणों के निर्माण का काम हो, उनमें संलग्न रहती हैं। यह बहुत बड़ी सेवा है। मैं सबको साधुवाद देता हूं और सबके प्रति प्रमोदभावना करता हूं कि हमारे साधु-साध्वियां शासन का कितना काम कर रहे हैं।

हमारी समणश्रेणी भी बहुत काम करती हैं, बड़ी सेवा देती हैं। एक निर्देश पर कहां-कहां चली जाती हैं। इसी तरह जैनविश्वभारती और जैनविश्वभारती विश्वविद्यालय में विद्या के विकास का कितना बड़ा काम हो रहा है। समाज के कार्यकर्ता भी अच्छी सेवाएं दे रहे हैं। इस बार सुरेन्द्रजी चोरड़िया को विश्वविद्यालय के चांसलर का दायित्व दिया गया और उन्होंने इस दायित्व को ओढ़ लिया। इसी तरह हमारी अन्य संस्थाओं के पदाधिकारी और कार्यकर्ता भी इंगित के अनुसार निष्ठा के साथ अपने दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं।

न्यूज के रुझान से बचें

हमारे साधु-साध्वियां अध्यात्म की साधना का विकास करते रहें। मैंने एक बात इस बार निर्णीत की है, भले ही उसे प्रयोग मान लें। साधना को आगे बढ़ाने के लिए न्यूज के उपक्रम से बचना चाहिए। मैंने साधु-साध्वियों और समण-समणियों से कह दिया है कि जो न्यारा (बहिर्विहार) में विचरण करते हैं, उनके दैनिक प्रवचनों की न्यूज तो अखबारों में आनी ही नहीं चाहिए। कोई विशेष कार्यक्रम हो तो उसकी आ सकती है, किन्तु वह भी सप्ताह में केवल एक बार से ज्यादा न आए। विकास महोत्सव आदि बड़े संघीय कार्यक्रमों की बात अलग है। मैंने यह बात इसलिए कही है कि इससे हमारी साधना आगे बढे, हमारा ध्यान साधना में लगे और हम बाह्य से भीतर की ओर आ सकें। वैसे तो भीतर की साधना हमारा लक्ष्य है, किन्तु कुछ बाह्य निमित्त बनते हैं, जो हमें अन्तर्मुखता से बहिमुर्खता की ओर ले जा सकते हैं, साधना में बाधक बनते हैं। उनमें अखबार की न्यूज के प्रति रुझान भी एक हो सकता है। इसीलिए मैंने साधु-साध्वियों को इस उपक्रम से बचने के लिए कहा है।

यथासंभव कल्प से न हो गोचरी

जहां तक गोचरी की बात है, मैंने सोचा कि हमारा पुरुषार्थ और आगे बढ़े, थोड़ा और नयापन और अच्छापन आए। गोचरी के संदर्भ में गुरुकुलवास में एक बात हमने प्रयोग करके देख ली है, उसके बारे में कहना चाहूंगा कि सामान्यतया कल्प से गोचरी न की जाए। गोचरी हम एकान्तर करें। कल्प से घर स्पर्शना, डेरा स्पर्शना विहार के सिवाय न करें। कोई परिस्थिति विशेष आ जाए तो स्वीकृति प्राप्त कर लें या बाद में लिखित निवेदित कर दें, किन्तु सामान्यतया कल्प से गोचरी न की जाए। एक दिन में केवल दो समय गोचरी हो, ऐसा निर्णय किया है। सब साधु-साध्वियां इस पर ध्यान दें।

सजग बनें स्वीकृत सिद्धान्तों के प्रति

मैं श्रावक समाज के लिए भी थोड़ी-सी बात बताना चाहता हूं। हमें यह चिंतन करना है कि उपासना

का अपना महत्त्व है। उपासना की पद्धतियां दो प्रकार की हैं--द्रव्य उपासना और भाव उपासना। हमारी तेरापंथ की परंपरा ने द्रव्य पूजा को नहीं, भाव पूजा को स्वीकार किया है। अपनी इस परंपरा का हमें सम्मान करना चाहिए। जैन शासन के प्रति हमारे मन में मैत्री का भाव रहे, फिर वह दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी या मूर्तिपूजक--कोई भी संप्रदाय हो, समाज हो। इन सबके प्रति हमारे मन में मैत्री और प्रमोद का भाव होना चाहिए। इन सम्प्रदायों के आचार्य पधार रहे हों, हमारे समाज के मुखिया लोग उनकी अगवानी करें, इसमें कोई गलत बात मैं नहीं मानता। उनके स्वागत कार्यक्रम में भाग लें, इसमें भी कोई आपत्ति वाली बात नहीं। आपका तेरापंथ भवन खाली है और अन्य समाज के आचार्य पधारें और उन्हें स्थान की जरूरत पड़े तो तेरापंथ भवन उन्हें देने में भी आपत्ति नहीं। यह तो हमारी सद्भावना होगी। आखिर वे भी तो जैन शासन के ही हैं। उनसे किसी भी तरह का दुराव रखना अच्छी बात नहीं। तेरापंथ की तो नीति ही अहिंसा और सद्भावना की रही है। हमें इसी नीति पर चलना है। लड़ाई, झगड़ा, विद्वेष, निंदा, आलोचना, कटुवचन, अपशब्द आदि में हमें नहीं जाना है। हमारा रास्ता तो सहयोग, सद्भावना, प्रेम, अनुकंपा और मैत्री का रास्ता है। हमें इसका पालन करना है, किन्तु यह भी ध्यान में रहे कि अपने स्वीकृत सिद्धान्तों के प्रति जागरूक भी रहना है। जहां तक मंदिर और मूर्तिपूजा की बात है, उस संदर्भ में थोड़ी सी बात मैं बताना चाहूंगा। जैन मंदिर में धूप-दीप, फल-फूल आदि से प्रतिमा की पूजा करना, ललाट पर टिक्की लगाना हमारी उपासना पद्धति में मान्य नहीं है, इसलिए ऐसा करना तेरापंथी श्रावक-श्राविकाओं के लिए उपयुक्त नहीं है। इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

दूसरी बात--मंदिर और मूर्तिपूजा हमारे यहां मान्य नहीं है और न ही हम इसका समर्थन करते हैं, इसलिए जैन मंदिर के निर्माण व जीर्णोद्धार के लिए आर्थिक अनुदान-चंदा देना, बोली बोलना, इन्द्र आदि बनना तेरापंथी श्रावक-श्राविकाओं के लिए उपयुक्त नहीं है। मूर्तिपूजक लोग करें, उनकी अपनी मान्यता है, अपनी विधा है, परंपरा है, वे करें, इसमें हमें क्या आपत्ति हो सकती है, किन्तु जो पद्धति हमने स्वीकृत नहीं की है, उसे प्रश्रय नहीं देना चाहिए। इसलिए तेरापंथी श्रावक-श्राविकाओं द्वारा मंदिर में दान देना, मंदिर का जीर्णोद्धार करवाना, बोली आदि बोलना, इन्द्र आदि बनना उचित नहीं है।

तीसरी बात--जैन मंदिर निर्माण की कोई समिति बने, उसका सदस्य बनना, संरक्षक या मुखिया बनना भी तेरापंथी श्रावक-श्राविकाओं के लिए उपयुक्त नहीं है।

चौथी बात--तीर्थयात्रा निकालना, संघ निकालना, उसका प्रायोजक बनना भी तेरापंथी श्रावक के लिए उपयुक्त बात नहीं है। मान लीजिए कोई जैन मंदिर तेरापंथ समाज के स्वामित्व में है, उसके लिए जो व्यवस्था करनी हो, जीर्णोद्धार करना हो, रखरखाव करना हो या उस मंदिर में पूजा आदि की व्यवस्था करनी हो, उसमें भी कोई आपत्ति नहीं है। क्योंकि वह मंदिर तेरापंथ समाज के आधिपत्य में है, इसलिए मंदिर की जो विधा या प्रणाली है, उसका लंघन भी नहीं किया जाना चाहिए। मंदिर अगर तेरापंथ समाज के पास है तो उसके लिए जो व्यवस्था संबंधी कार्य, जो उचित है, उसे करने में कोई आपत्ति की बात नहीं है।

इस तरह कुछ प्रमुख बातों के संदर्भ में पॉलिसी आपको बताई है। हालांकि मैं यह भी कहना चाहूंगा कि आज मैंने आपको पॉलिसी बताई है। भविष्य में अगर कभी कोई और भी विचार इस संदर्भ में अच्छा लगेगा तो उसे बताया जा सकेगा। लेकिन आज की घड़ी में हमारी यही पॉलिसी है और जिस समय में जो पॉलिसी लागू है, उस समय में हमें उसी का पालन करना चाहिए। जब तक इस संदर्भ में कोई दूसरी बात मैं नहीं कहूं, तब तक हमारा श्रावक समाज इसी पॉलिसी को अंगीकार करके चले, यह अपेक्षा है।

प्रश्रय न दें संघमुक्त को

कुछ साधु-साध्वियां संघ से अलग भी हो जाते हैं। मैं तो चाहता हूं कि उनके प्रति भी सद्भावना, मंगलभावना रखें कि उनका भी कल्याण हो, वे भी अच्छे रास्ते पर चलें, अच्छी साधना करें। परन्तु हमारे संगठन की जो व्यवस्था है, उस पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। संघमुक्त साधु-साध्वियों के पास श्रावक लोग जाते रहें, यह अपेक्षा नहीं है। कभी किसी विशेष अपेक्षा से जाना हो, उससे पूर्व आचार्य का इंगित ले लें। इंगित मिलने के बाद उनसे मिलने जाना कोई गलत बात नहीं है। मैं स्पष्ट कर दूं कि संघमुक्त लोगों के प्रति हमारे मन में

किसी प्रकार की दुर्भावना नहीं है, किन्तु संघ की व्यवस्था के अनुसार संघमुक्त साधु-साध्वियों के पास जाने का ढाळा नहीं रखना चाहिए।

इस संदर्भ में यह भी ध्यान में रहे कि कोई मुखवस्त्रिका उतार कर भी चंदा मांगने आए तो मेरा यह चिंतन है कि संघमुक्त लोगों को चंदा भी नहीं देना चाहिए। कोई भूखा हो तो उसके लिए भोजन की व्यवस्था कर देना कोई बुरी बात नहीं। उनसे हमारा कोई द्वेष भाव तो है नहीं। लेकिन कोई संघमुक्त व्यक्ति चंदा आदि मांगने आए तो उसे चंदा देना श्रावक-श्राविकाओं के लिए उपयुक्त बात नहीं है। जहां संघमुक्त साधु-साध्वियां हों, वहां हमारे समाज के संघों को रहना और ठहरना भी नहीं चाहिए। हम संघमुक्त और टाळोकरों की निंदा न करें। वे अपना रास्ता बदल चुके, इसलिए उनकी वे जानें। हम क्यों उनकी निंदा और आलोचना में जाएं? हम तो केवल अपनी मर्यादा और व्यवस्था का ध्यान रखें।

संघमुक्त साधु-साध्वियों से पद्मावती आदि की पूजा करवाना, उनसे मंत्र लेना, गंडा-ताबीज बंधवाना पूर्णरूप से निषिद्ध है। मंत्र लेना हो तो हमारे मंत्री मुनि विराजमान हैं, उनसे मंत्र के बारे में पूछा जा सकता है। बाइयां साध्वीप्रमुखाजी से पूछ लें। किसी संघमुक्त से मंत्र लेने क्यों जाएं? हम तो भगवान महावीर पर आस्था रखें, आचार्य भिक्षु पर आस्था रखें, नवकार मंत्र पर आस्था रखें, फिर भी कर्मयोग से कोई आपदा आ जाए तो डरें नहीं, आस्थाबल और समता भाव से उसका सामना करें। इस संदर्भ में कहने का मूल तात्पर्य इतना ही है कि संघमुक्त से किसी प्रकार का संस्तव न रखें।

जमीकन्द के सेवन से बचें

जमीकन्द के बारे में मैंने पहले भी कहा है। साधु-साध्वियों से भी कहा है और अनिश्चित काल के लिए प्रयोग भी करवाया है कि साधु-साध्वियां उबली हुई जमीकन्द न लें। उबली हुई आलू, शकरकन्द, गाजर, मूली, प्याज और लहसुन को साधु-साध्वियां और समण-समणियां गोचरी में न लें और आप भी न बहराएं, इस बात का ध्यान रहे। हमारे समाज के जो भोजनालय चलते हैं प्रवास काल में चतुर्मास, मर्यादा महोत्सव और यात्राओं में, उनमें व्यवस्था आदि से जुड़े लोग ध्यान दें कि जमीकन्द के प्रयोग से यथासंभव बचना चाहिए। श्रावक-श्राविकाएं भी अपने व्यक्तिगत जीवन में जितना संभव हो सके, इन छह जमीकन्दों से बचने का प्रयास करें, घर में इन चीजों को काम में लेने से बचने का प्रयास करें। मैं तो यह भी कहना चाहूंगा कि घर में शादी-विवाह या इस तरह के दूसरे बड़े आयोजनों में इन छह जमीकन्दों के प्रयोग से बचने का प्रयास करें। जमीकन्द में अनंतानंत जीव विद्यमान हैं। अव्रत को रोकने और अहिंसा धर्म की अनुपालना के लिए जमीकन्द के सेवन का वर्जन वांछनीय है। (आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने तत्काल छह जमीकन्द का आगामी एक वर्ष तक के लिए परित्याग किया) संयम की वृद्धि के लिए गाजर और शकरकन्द के हलवे और आलू के चिप्स आदि का परिहार करना अच्छा है।

हमारी संस्थाओं में अध्यक्ष, मंत्री, अन्य पदाधिकारी व कार्यकारिणी के सदस्य आदि मद्य-मांस का सर्वथा परिहार करें। ड्रिंकिंग न करें। शराब जैसे व्यसन के आदी लोग समाज की किसी संस्था में पदाधिकारी या उसकी कार्यकारिणी के सदस्य बने ही नहीं, यदि बने हुए हैं तो उन्हें स्वेच्छा से अपने पद का त्याग कर देना चाहिए। मद्य-मांस का सेवन करने वाला तेरापंथ की किसी भी संस्था में शोभित नहीं होना चाहिए। इसे ध्यान में रखना चाहिए।

तेरापंथ सभा भवनों में मैंने कहीं-कहीं देखा कि वहां दीवार पर गृहस्थों के फोटो लगे हुए होते हैं। महासभा के लोग इस पर भी विचार करें। सभा भवन की दीवारों पर भगवान महावीर, आचार्यों आदि के फोटों हों तो भवन कहीं ज्यादा शोभयमान हो सकते हैं। लेकिन उन भवनों में गृहस्थों की फोटो लगाना विचारणीय है। आप लोग इस संदर्भ में सोचें कि क्या यह उचित है? इस संदर्भ में एक बात और विचारणीय है कि हमारे सभा भवनों में दूसरे समाज के साधु-साध्वियों का प्रवास हो और वे सभा भवन की दीवारों पर लगे हमारे आचार्यों के फोटो उतरवाएं, यह ठीक नहीं। उस पर आवरण भी नहीं डाला जाना चाहिए। यह बात उन्हें स्पष्ट रूप से बता देनी चाहिए। स्थान का उपयोग करने की कोई मनाही नहीं है।

साध्वियों का विशेष ध्यान रखें

हमारे धर्मसंघ में आचार्य का सर्वोपरि स्थान है। यह शासन की गादी है, भिक्षु स्वामी की गादी है। इसलिए इस गादी का बड़ा महत्त्व है। सभी शासन की इस गादी के चिंतन, निर्देशन और इंगित का ध्यान रखें। हमारे साधु-साध्वियां प्रवास क्षेत्रों की ओर विहार करते हैं तो साधुओं की अपेक्षा मैं साध्वियों की चिंता ज्यादा करता हूं। साध्वियों का हमें बड़ा ध्यान और सम्मान रखना चाहिए। मैंने तो संतों से भी कहा कि गोचरी-पानी के प्रसंग में पांती आदि की बात न कर साध्वियों को प्राथमिकता देनी चाहिए। लंबे प्रवास में डेस्क आदि की जरूरत पड़े तो वहां पांती की बात को गौण कर साध्वियों को पहले देना चाहिए। पहले साध्वियों की पूर्ति हो जानी चाहिए। विहार आदि में साधु-साध्वियों का ध्यान रखा जाए और साध्वियों का तो विशेष ध्यान रखा जाए। उन्हें अकेला विहार न करना पड़े, कोई विश्वस्त आदमी साथ में रहना चाहिए, चाहे वह कासीद हो, उनके साथ जरूर रहना चाहिए, श्रावक समाज इसका ध्यान रखे। हमारा श्रावक समाज बहुत विनीत है, जागरूक है, इसलिए इस संदर्भ में कुछ ज्यादा कहने की अपेक्षा नहीं।

सौ दीक्षाओं का लक्ष्य गुरुदेव तुलसी के जन्मशताब्दी वर्ष पर

गुरुदेव तुलसी का जन्म शताब्दी वर्ष सामने है। मैंने तो जन्म शताब्दी वर्ष के लिए एक टारगेट बनाया है सौ दीक्षाओं का। सन् २०१४ की कार्तिक शुक्ला द्वितीया के सूर्यास्त तक संघ में सौ दीक्षाएं हो जाएं, यह हमारा लक्ष्य है। मैंने तो यह माना है कि गुरुदेव तुलसी की जन्म शताब्दी का कोई सबसे बड़ा काम है तो वह सौ दीक्षाओं का काम है। इस संदर्भ में श्रावक समाज से मेरी अपेक्षा यह है और मैंने केलवा प्रवास में कहा भी था कि श्रावक समाज सौ दीक्षाओं में अपना योगदान दे। इसके लिए ज्यादा कुछ करें तो करें, न कर सकें तो कम से कम इतना तो होना ही चाहिए कि परिवार में कोई दीक्षा के लिए तैयार हो तो उसे मना न करें। आप उस वैरागी भाई या बहिन की परीक्षा भले ही करें, किन्तु 'ना' नहीं कहने का संकल्प आपको लेना चाहिए। (बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने दीक्षा की मनाही न करने का परित्याग किया)

पहले हमने दीक्षार्थी तैयार करने का दायित्व साधु-साध्वियों को प्रतिशत में दिया था। अब हमने एक नया फार्मूला बना दिया है कि हर सिंघाड़ा और साझ दो-दो दीक्षार्थी तैयार करने का लक्ष्य रखे। निश्चित रूप से इस कार्य को संपन्न करना किसी के हाथ की बात नहीं, किन्तु सलक्ष्य प्रयास सभी सिंघाड़ों और साझ को करना है। समण-समणियां भी इसके अपवाद नहीं हैं। साध्वियां ओघे भले ही कम लाएं, किन्तु ओघा लेनेवाला हमारे पास लाएं। पिछले दिनों मेरे पास साधु-साध्वियों के कई संवाद आए कि अमुक जगह वैरागी तैयार है। अब वहां चतुर्मास या उस क्षेत्र में विचरण करने वाले सिंघाड़ों का दायित्व है कि उस वैरागी और उसके परिवार से संपर्क कर उसे दीक्षा के लिए तैयार करें। वैरागी हो तो वह हम तक पहुंच जाए और वैरागण हो तो वह संस्था में भर्ती हो सके, इतनी तैयारी हो जाए तो वह अच्छा काम हो सकता है। गुरुदेव तुलसी की जन्मशताब्दी का यह सबसे बड़ा काम है।

महत्त्व शासन का है

हमारा संघ महान् है। हम संघ के सेवक हैं। यहां व्यक्ति का महत्त्व उतना नहीं, जितना शासन का है। इसलिए संघ की सेवा में हमें संलग्न रहना चाहिए। आज मैं मंत्री मुनिश्री को वंदना करने गया तो मुनिश्री उदितकुमारजी ने बताया कि आज मंत्री मुनि का ७१वां दीक्षा दिवस है। बात चल पड़ी तो मंत्री मुनि ने फरमाया--'मेरी अस्मिता बढ़ गई है। कोई भी साधु आ जाए तो मेरे मन में बड़ा अहोभाव रहता है।' संतों ने कहा--'मंत्री मुनि के पास कभी भी जाएं, मंत्री मुनि बड़े वात्सल्य भाव से हमसे बात करते हैं। संतों को वात्सल्य भाव से सहलाते भी हैं।' व्यक्ति का महत्त्व गौण है, शासन का महत्त्व बढ़े। शासन महान् है--यह भावना व चिंतन हमारा हमेशा बना रहना चाहिए।

इस वर्ष सीखें प्रतिक्रमण

इस वर्ष श्रावक सम्बोध और उससे पहले चौबीसी सीखने/सिखाने का आह्वान किया था। अब आगामी वर्ष के लिए प्रतिक्रमण सीखने और सिखाने का विशेष प्रयास करें। हो सके तो निर्देश मिलने पर बालक-बालिकाओं को साधु प्रतिक्रमण भी सिखा दें, अन्यथा श्रावक प्रतिक्रमण तो सिखाएं ही। साधु-साध्वियां और समण-समणियां जिस क्षेत्र में भी जाएं, वहां के भाई-बहनों और बच्चों को श्रावक प्रतिक्रमण और निर्देशानुसार साधु प्रतिक्रमण सिखाने का लक्ष्य रखें।

हमारे समाज के अपने भवन हैं। वहां महीने में दो बार पक्खी के दिन सामूहिक प्रतिक्रमण का क्रम बने। महासभा, उससे जुड़ी हुई सभाएं और श्रावक समाज इस ओर ध्यान दे। उपासकों की भी इसमें भूमिका हो सकती है, कैसेट आदि श्रव्य के साधन भी उपयोग में आ सकते हैं।

आचार्यवर ने इस अवसर पर ५ संतों, ११ साध्वियों और ४९ श्रावक-श्राविकाओं की संघनिष्ठा और सेवाभावना का उल्लेख करते हुए उन्हें विशिष्ट सम्बोधनों से संबोधित किया। उन साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं के नाम इसी विज्ञप्ति में प्रकाशित हैं।

२७ जनवरी। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में तपस्या के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए जनता को खाद्यसंयम और खाद्य विवेक की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का भी अभिभाषण हुआ। ब्यावर में साध्वी सम्यक्प्रभाजी की प्रेरणा से भरे गए ५१ बारहव्रती श्रावकों के संकल्प पत्र श्री नोरतनमलजी दूगड़ ने एवं सोलापुर से समागत श्री शांतिलालजी सेठिया ने बारहव्रती श्रावकों के ३१ संकल्प पत्र आचार्यवर को उपहृत किए।

संबोधन-अलंकरण समारोह

आज मध्याह्न में पूज्यवर के सान्निध्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा संबोधन-अलंकरण समारोह समायोजित हुआ। इस विशेष समारोह में सन् २०११ में परम श्रद्धास्पद आचार्यवर द्वारा शासनसेवी, तपोनिष्ठ, महादानी, तत्वज्ञ, श्रद्धानिष्ठ, श्रद्धा की प्रतिमूर्ति, कल्याणमित्र आदि संबोधनों से संबोधित १३४ श्रावक-श्राविकाओं का सम्मान किया गया।

समारोह में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा का सर्वोच्च सम्मान 'समाजभूषण' अलंकरण दिल्ली के वरिष्ठ श्रावक श्री मांगीलालजी सेठिया को प्रदान किया गया। महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चंडालिया ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। महासभा के संगठन प्रभारी श्री विजयसिंह चोरड़िया द्वारा अभिनंदन पत्र के वाचन के उपरान्त अध्यक्ष श्री चैनरूप चंडालिया, प्रधान न्यासी श्री राजेन्द्र आदि पदाधिकारियों ने श्री सेठिया को गौरवपूर्ण अलंकरण से विभूषित किया। इस अवसर पर श्री मांगीलालजी सेठिया ने अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त करते हुए पूज्यवरों के आशीर्वाद और अनुग्रह के प्रति अपनी श्रद्धाप्रणति अर्पित की। परिजनों ने गीत के माध्यम से अपने भावों को प्रस्तुति दी।

इस वर्ष का उपासक प्रवक्ता पुरस्कार जाणुन्दा निवासी जयपुर प्रवासी श्री घीसूलाल नाहर को प्रदान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संयोजन महासभा के महामंत्री श्री भंवरलाल सिंघी ने किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा--'मर्यादा महोत्सव की पृष्ठभूमि में सम्मान का कार्यक्रम रहा। श्रावक श्री मांगीलालजी सेठिया को महासभा का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सम्मान 'समाजभूषण' दिया गया। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि सम्मान प्राप्तकर्ता का व्यक्तित्व कितना विशिष्ट है। सेठियाजी ने गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के दिल्ली प्रवास और चतुर्मास के दौरान प्रवास व्यवस्था समिति का अध्यक्षीय दायित्व संभाला। गुरुदेव तुलसी ने इन्हें 'अजातशत्रु' संबोधन से संबोधित किया। तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक के रूप में भी इन्होंने अपनी सेवाएं दीं। सेठियाजी खूब आध्यात्मिक, धार्मिक साधना को आगे बढ़ाते हुए पवित्र सेवा करते रहें।

जिन्हें हमने गत वर्ष संबोधित किया, उन शताधिक व्यक्तियों को महासभा द्वारा सम्मानित किया गया। सम्मान प्राप्तकर्ता सभी व्यक्ति और उनके परिवार के लोग सम्मान की गरिमा को बनाए रखते हुए पवित्र कार्य

करते रहें और जीवन में आध्यात्मिक उत्थान करते रहें। श्री घीसूलालजी नाहर ने उपासक प्रवक्ता के रूप में अच्छी सेवा दी है। उन्हें महासभा द्वारा 'उपासक प्रवक्ता' का सम्मान दिया गया। इनमें अच्छा उत्साह प्रतीत हो रहा है। ये भी खूब आध्यात्मिक विकास करते रहें।'

आचार्यवर के उद्‌बोधन के पश्चात श्रीमती हंसा दसानी (गर्ग) ने अपनी कृति 'मां मुझे कुछ कहना है' पूज्यवर को उपहृत की। आचार्यवर ने इस संदर्भ में कहा--'प्रस्तुत पुस्तक से पाठकों को आध्यात्मिक संप्रेरणा प्राप्त हो तो लेखिका का श्रम अधिक सार्थक हो सकेगा।'

अणुव्रत लेखक पुरस्कार समर्पण समारोह

आज रात्रि में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यप्रवर के सान्निध्य में अणुव्रत महासमिति द्वारा श्री हुकमचन्द सेठिया द्वारा प्रायोजित वर्ष २०१० का 'अणुव्रत लेखक पुरस्कार' हिसार निवासी श्री उदयभानु हंस को प्रदान किया गया। कार्यक्रम में अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष श्री बाबूलाल गोलछा ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए महासमिति के पदाधिकारियों के साथ श्री हंसजी को प्रशस्तिपत्र एवं पुरस्कार राशि इक्यावन हजार का चैक प्रदान किया। इससे पूर्व महासमिति के उपाध्यक्ष श्री डालचन्द कोठारी ने प्रशस्तिपत्र का वाचन किया। इस अवसर पर अणुव्रत प्रभारी शासनश्री मुनि सुखलालजी, डा. महेन्द्र कर्णावट और श्री महेन्द्र जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संयोजन महामंत्री श्री संपत श्यामसुखा ने किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'श्री उदयभानुजी गुरुदेव तुलसी के समय से ही अणुव्रत के साथ जुड़े हुए हैं। यह पुरस्कार ज्ञान और विद्वत्ता का सम्मान है। उदयभानुजी अहिंसा और नैतिकता की प्रतिष्ठा के लिए प्रयत्नशील रहें।'

समणी ऋजुप्रज्ञाजी समणी नियोजिका मनोनीत

२८ जनवरी। बसन्त पंचमी का पावन दिन। परमाराध्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में समणीवृन्द की संगोष्ठी समायोजित हुई। पूज्यवर ने आगामी कार्यकाल के लिए समणी ऋजुप्रज्ञाजी को समणी नियोजिका के रूप में मनोनीत किया। इस अवसर पर नवमनोनीत समणी नियोजिका और निवर्तमान समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए।

१४८वें मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ

तेरापंथ धर्मसंघ के १४८वें मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय समारोह का प्रथम दिन। परम पावन आचार्यवर का श्वेतवाहिनी के साथ राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में निर्मित मर्यादा समवसरण के विशाल प्रांगण में मंगल पदार्पण। मध्याह्न में लगभग १२.१५ बजे पूज्यप्रवर द्वारा महामंगलमंत्रोच्चार के पश्चात् मर्यादा महोत्सव के शुभारंभ की विधिवत घोषणा। पूज्य आचार्यवर ने महामना आचार्य भिक्षु द्वारा लिखित मर्यादा पत्र को अत्यन्त सम्मान और श्रद्धा के साथ स्थापित किया। मुनि दिनेशकुमारजी ने जयघोषों के साथ 'मर्यादा गीत' का संगान किया।

साध्वी जिनप्रभाजी ने साध्वी समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए पूज्यवर से सेवा में नियुक्त करने की प्रार्थना की। साध्वीवृन्द ने गीत के माध्यम से भी अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। मुनि जम्बूकुमारजी (सर.) ने मुनिवृन्द की ओर से सेवा में नियुक्त करने का अनुरोध किया। मुनिवृन्द ने भी गीत का संगान किया।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'बसंत पंचमी के दिन मर्यादा महोत्सव का प्रारंभ होता है और आज के दिन ही सेवाकेन्द्र में सेवा देनेवालों की नियुक्ति होती है। मैं सेवा को बहुत महत्त्व देता हूं। अवसर आने पर बड़े पदों पर रहने वालों को भी सेवा के लिए तत्पर रहना चाहिए। जिस समय जिस सेवा की अपेक्षा हो, वह सेवा करनी चाहिए। सेवा हमारा परम धर्म है। सेवार्थी का दायित्व है कि वह वृद्ध और ग्लान को चित्तसमाधि पहुंचाए। अग्रणी भी सेवा कार्य में संकोच न करें। सेवा के संदर्भ में पिछले संबंधों को भी नहीं देखना चाहिए। अतीत को विस्मृत कर प्रेम, निष्ठाभाव, आत्मीयभाव और अग्लान भाव से सेवा करनी

चाहिए। साधु-साध्वियों में सेवा की अच्छी भावना है। हमें विरासत में सेवा के संस्कार मिले हैं। अधिक से अधिक सेवा दें और कम से कम सेवा लें। सेवा की भावना को और अधिक पुष्ट बनाएं, यह अपेक्षा है।'

समणश्रेणी की सेवाभावना का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा--'हमारी समणश्रेणी भी कितनी सेवा करती है। जब साधु-साध्वियों को चिकित्सा के लिए भिन्न समाचारी में ले जाने की अपेक्षा होती है तो इस श्रेणी के सदस्य एक इंगित पर कहां से कहां पहुंच जाते हैं। सेवा के क्षेत्र में समणश्रेणी की जागरूकता सदैव बनी रहे।' पूज्यवर ने श्रावक समाज द्वारा की जानेवाली लौकिक और लोकोत्तर--दोनों प्रकार की सेवाओं का उल्लेख किया। आचार्यवर ने सेवाकेन्द्रों के लिए जिन साधु-साध्वियों की नियुक्तियां की, वे इसी विज्ञप्ति में नवीन घोषित चतुर्मासों की सूची के साथ संलग्न हैं।

पूज्यवर के प्रवचन के उपरान्त समणीवृन्द ने सेवा के संदर्भ में गीत का संगान किया। शासनश्री मुनि सुखलालजी ने सेवा के संदर्भ में अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। मुनि विजयकुमारजी एवं मुनि स्वस्तिककुमारजी आदि मुनियों ने गीत का संगान किया। आमेट तेरापंथ युवक परिषद और कन्यामंडल ने भी गीत के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक श्री लालचन्द सिंघी ने श्रावक समाज के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए।

मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक अभिभाषण में कहा--'मर्यादा महोत्सव का पावन अवसर हमें आचार्य भिक्षु की स्मृति कराता है। मर्यादाओं का होना महत्त्वपूर्ण नहीं है, महत्त्वपूर्ण है उनका पालन होना। जो संघ मर्यादाओं के प्रति सजग है, वह स्वस्थ और दीर्घजीवी बना है। हमें मर्यादानिष्ठा द्वारा संघ की नींव को और अधिक मजबूत बनाना है।'

जैन विश्वभारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रजी चोरड़िया ने 'जय तिथि पत्रक', शासनसेवी श्री विमल नाहटा ने आदर्श साहित्य संघ द्वारा प्रकाशित परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ की नवीन कृति 'सफलता के सूत्र', साध्वी पुण्ययशाजी ने विचाराभिव्यक्ति के साथ अपनी कृति 'लोगस्स : एक साधना भाग-१ एवं भाग २, साध्वी काव्यलताजी ने अपने भावों की प्रस्तुति के साथ साध्वी मनोहरांजी का जीवनवृत्त 'मनहर साध्वी मनोहरां', मुनि विजयकुमारजी ने अपनी कृतियां 'भावों का संसार' व 'संगीत सुधा', अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष श्री बाबूलाल गोलछा ने गुरुदेव तुलसी की कृति 'अणुव्रत आन्दोलन की पृष्ठभूमि', मित्र परिषद के मंत्री भूपेन्द्र सामसुखा और श्री जीतमल नाहटा ने तिथि पत्रक और तिथि दर्पण, अ. भा. तेयुप के अध्यक्ष श्री संजय खटेड़ एवं श्री नरपत चोरड़िया आदि ने नशामुक्ति कैलेण्डर और जैन तीर्थंकर दर्शनावली, तेरापंथ आचार्य दर्शनावली चक्रक पूज्यवर को उपहृत किए।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव

२६ जनवरी। आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के तृतीय चरण का समायोजन। पूज्यवर के महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ। स्थानीय महिला मंडल, ज्ञानशाला ने अपनी प्रस्तुति दी। स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल कच्छारा एवं तेयुप के अध्यक्ष श्री प्रवीण ओस्तवाल ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चंडालिया, अ.भा.तेयुप के अध्यक्ष श्री संजय खटेड़, अ.भा.महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया, जयतुलसी फाउण्डेशन के प्रबन्ध न्यासी श्री सुरेन्द्र दूगड़, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री जसकरण चौपड़ा, जैविभा के अध्यक्ष एवं जैविभा यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति श्री सुरेन्द्र चोरड़िया, अणुव्रत महासमिति के महामंत्री श्री संपत श्यामसुखा, अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक श्री ख्यालीलाल तातेड़, पा.शि. संस्था के उपाध्यक्ष शासनसेवी श्री कन्हैयालाल छाजेड़ ने अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर अपनी अभ्यर्थना समर्पित की। श्री रमेश कोठारी ने आचार्य महाप्रज्ञ एज्युकेशन एंड रिसर्च फाउण्डेशन की अवगति देते हुए शिक्षा के इस महत्त्वपूर्ण संस्थान से जुड़ने वाले व्यक्तियों के नामों की घोषणा की।

आचार्य-अभिवंदना में मुनि चैतन्यकुमारजी, मुनि अनुशासनकुमारजी, मुनि विकासकुमारजी, मुनि आनंदकुमारजी, मुनि जम्बूकुमारजी (मिंजूर), मुनि तन्मयकुमारजी, मुनि महावीरकुमारजी, मुनि हितेन्द्रकुमारजी, साध्वी सोमप्रभाजी, समणी गुरुप्रज्ञाजी, समणी संबोधप्रज्ञाजी एवं मुमुक्षु अशोक ने गीत प्रस्तुत किया। मुनि रमेशकुमारजी, मुनि संबोध कुमारजी, मुनि सुधाकरजी, मुनि तत्वरुचिजी, साध्वी अमितप्रभाजी, साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' (श्रीडूगर) साध्वी काव्यलताजी, साध्वी प्रभावनाश्रीजी ने कविता, मुक्तक आदि के माध्यम से आचार्यवर का अभिनंदन किया। समूह

के क्रम में मुनिवृन्द, साध्वीवृन्द, सरदारशहर की साध्वियों एवं समणीवृन्द ने भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किए। मुनि दर्शनकुमारजी ने अभिवंदना के क्रम में अपनी कविता प्रस्तुत करते हुए दीक्षा-दृश्य गुंफित एक कलात्मक ग्लास भेंट की। उनके द्वारा निर्मित कलात्मक अमृत कलश मंत्री मुनिश्री ने उपहृत किया। महाश्रमण नाम के साथ आठ नये थोकड़ों से युक्त हस्तलिखित पुस्तक भी आपने आचार्यवर को भेंट की। साध्वी नगीनाजी एवं समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने इस अवसर पर अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए।

आज के इस गौरवपूर्ण प्रसंग पर आमेट के पेंटर राजेश ने आचार्यश्री का पेंसिल स्केच, श्री सुखराजजी सेठिया (दिल्ली) ने डा.साध्वी सरलयशाजी की नवीन कृति 'अंधेरे में उजाला', श्रीमती सूरज बरड़िया एवं श्रीमती पुष्पा बैद ने मंडल द्वारा प्रकाशित 'संकल्प कैलेण्डर', ममता-रोहित कच्छारा (मुम्बई) ने आचार्यवर का आकर्षक चित्र, आमेट महिला मंडल द्वारा हस्तनिर्मित ग्रीटिंग कार्ड, उत्तर हवड़ा सभा की ओर से श्री जतन सेठिया व विकास सामसुखा ने आचार्य परंपरा का कैलेण्डर, श्री अर्जुन मेड़तवाल (सूरत) ने अपना मुक्तक संकलन भेंट किया। महासभा की ओर से राष्ट्रसंत आचार्य तुलसी का चित्रमय संक्षिप्त जीवन परिचय, महामंत्री प्रतिवेदन व सर्वेक्षण फार्म भेंट किए गए। अमृतम मीडिया द्वारा पचास हजार स्कूली विद्यार्थियों को वितरित की जा रही शिक्षण सामग्री का किट भेंट किया गया। बच्चों के लिए उपयोगी 'पर्सनेलिटी इन रिदम' शीर्षक से अमृत वाणी द्वारा निर्मित अंग्रेजी कविताओं की एक सीडी श्री नोरतन बच्छावत ने भेंट की। इसमें मुनि विजयकुमारजी, मुनि पीयूषकुमारजी व मुनि अभिजितकुमारजी की कविताएं सस्वर प्रस्तुत की गई हैं। आचार्यश्री महाश्रमण व साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के चित्रों से युक्त दो एल्बम श्री प्रकाश बोहरा व सलिल लोढ़ा ने भेंट किए। श्री बाबूलाल कच्छारा, श्री भूरामल श्यामसुखा, श्री विमल नाहटा ने चित्रफ्रेम भेंट किया। सुश्री निधि चोरड़िया (आमेट-मुम्बई) ने स्वहस्तनिर्मित आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाश्रमण का विशाल फोटो फ्रेम उपहृत किया। आमेट प्रवास में चली अष्टदिवसीय दर्शनाचार प्रवचनमाला के अंतर्गत पूज्यवर द्वारा प्रदत्त विषयवद्ध आठ प्रवचनों की सीडी अमृतवाणी की ओर से श्री जसकरण चौपड़ा ने पूज्य चरणों में समर्पित की। श्रद्धानिष्ठ संगायक श्री कमल सेठिया ने आचार्य अभिवंदना में सुमधुर गीत प्रस्तुत करते हुए श्री विमलजी नाहटा के साथ अपनी नवीन सीडी 'जय-जय महाश्रमण' पूज्य चरणों में भेंट की।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने सबकी विविध रूपों में प्रस्तुत अभिवंदना व मंगल भावों को प्रमुदित मन से स्वीकार किया।

मर्यादा महोत्सव का त्रिदिवसीय कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह और उल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अवशिष्ट रिपोर्ट देखें आगामी विज्ञप्ति में।

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा सन् २०१२ के लिए घोषित चतुर्मास और समणीकेन्द्र

१. शासनश्री मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' की देखरेख और निर्देशन में सहवर्ती संत	छापर सेवाकेन्द्र
२. शासनगौरव मुनि धनंजयकुमारजी की देखरेख और निर्देशन में सहवर्ती संत	जैन विश्वभारती लाडनूं सेवाकेन्द्र
३. साध्वी प्रमोदश्रीजी	लाडनूं सेवाकेन्द्र
४. साध्वी विशदप्रज्ञाजी	बीदासर समाधिकेन्द्र
५. साध्वी स्वर्णरेखाजी, साध्वी प्रज्ञाश्रीजी	श्रीडूंगरगढ़ सेवाकेन्द्र
६. साध्वी कनकरेखाजी	गंगाशहर सेवाकेन्द्र
७. साध्वी कैलाशवतीजी	राजलदेसर सेवाकेन्द्र
८. शासनश्री मुनिश्री राकेशकुमारजी	उदयपुर
९. शासनश्री साध्वी सरोजकुमारीजी	उदयपुर की ओर विहार
१०. साध्वी जसवतीजी	आमेट
११. शासनश्री साध्वी नगीनांजी	भीलवाड़ा
१२. साध्वी शान्ताकुमारीजी	नाथद्वारा

१३. साध्वी लक्ष्मीकुमारीजी	देवगढ़
१४. साध्वी गुणमालाजी	केलवा
१५. साध्वी अमितप्रभाजी	गंगापुर
१६. मुनिश्री जतनमलजी	राजनगर
१७. शासनश्री साध्वी भीखांजी (लाडनूं), साध्वी चन्द्रकलाजी	मेवाड़ की ओर
१८. सेवाभावी मुनिश्री जयचन्दलालजी	फिलहाल बिनोल में रहें
१९. साध्वी मधुबालाजी	अजमेर
२०. साध्वी अणिमाश्रीजी, साध्वी मंगलप्रभाजी	जयपुर
२१. साध्वी विद्यावतीजी'प्रथम'(श्रीडूंगरगढ़)	ब्यावर
२२. साध्वी सुमनश्रीजी	श्रीगंगानगर अंचल की ओर
२३. शासनश्री साध्वी रतनकुमारीजी (सरदारशहर)	तारानगर की ओर
२४. साध्वी भाग्यवतीजी (श्रीडूंगरगढ़)	सादुलपुर की ओर
२५. साध्वी विनयश्रीजी 'द्वितीय' (श्रीडूंगरगढ़)	नोहर
२६. साध्वी विनयश्रीजी (बोरावड़)	बीकानेर चोखले की ओर
२७. साध्वी कंचनकुमारीजी (लाडनूं)	दर्शन करें
२८. शासनगौरव मुनिश्री ताराचन्दजी,मुनि सुमतिकुमारजी	जोधपुर की ओर
२९. साध्वी रतनश्रीजी (लाडनूं)	मारवाड़ की ओर
३०. साध्वी लब्धिश्रीजी	पाली की ओर
३१. साध्वी कमलश्रीजी, साध्वी जिनरेखाजी	दर्शन करें
३२. साध्वी राजकुमारीजी 'द्वितीय' (नोहर)	हांसी की ओर
३३. साध्वी सोमलताजी	हिसार
३४. मुनि कुलदीपकुमारजी	भिवानी
३५. साध्वी रतनश्रीजी (श्रीडूंगरगढ़)	टोहाना
३६. शासनश्री साध्वी संघमित्राजी	सिरसा
३७. साध्वी विनयवतीजी	रतिया की ओर विहार करें, वहां रहें
३८. मुनिश्री विजयराजजी	अभी आदमपुर में रहें
३९. साध्वी जिनबालाजी	कालांवाली
४०. साध्वी मानकुमारीजी (सरदारशहर)	हिसार होकर उचाना की ओर
४१. साध्वी उज्ज्वलकुमारीजी	पचकूला
४२. साध्वी जयप्रभाजी	पंजाब की ओर
४३. साध्वी मधुरेखाजी	जगराओं
४४. साध्वी चंदनबालाजी	संगरूर
४५. मुनिश्री धर्मचन्दजी	धूरी
४६. साध्वी धनश्रीजी	भटिंडा
४७. साध्वी सुदर्शनाश्रीजी	अहमदगढ़मंडी
४८. मुनिश्री कमलकुमारजी	मानसामंडी
४९. साध्वी संयमप्रभाजी (हांसी)	पंजाब की ओर
५०. साध्वी रविप्रभाजी	पटियाला की ओर
५१. शासनश्री मुनिश्री वत्सराजजी	मोमासर
५२. शासनश्री मुनिश्री सुखलालजी, मुनि मोहजीतकुमारजी	दिल्ली
५३. मुनिश्री मुनिसुव्रतकुमारजी	दिल्ली
५४. साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय'(श्रीडूंगरगढ़)	दिल्ली

५५. साध्वी अशोकश्रीजी	अहमदाबाद
५६. साध्वी सम्यक्प्रभाजी	भुज
५७. मुनि भूपेन्द्रकुमारजी	उधना
५८. मुनि दर्शनकुमारजी	आसीन्द
५९. मुनिश्री सुरेशकुमारजी	सूरत
६०. मुनि आलोककुमारजी	घाटकोपर, मुम्बई(श्रावण-भाद्रपद)
६१. साध्वी प्रबलयशाजी	साक्री
६२. मुनि धर्मेशकुमारजी	औरंगाबाद
६३. साध्वी कनकश्रीजी (राजगढ़)	इन्दोर
६४. साध्वी कुन्दनप्रभाजी	पेटलावद
६५. साध्वी लब्धिप्रभाजी	जावद
६६. मुनि जम्बूकुमारजी (सरदारशहर)	ग्वालियर की ओर
६७. साध्वी सत्यप्रभाजी	मालवा की ओर
६८. साध्वी कुन्दनरेखाजी	कटक
६९. साध्वी कनकश्रीजी (लाडनूं)	पूर्वांचल, कोलकाता
७०. साध्वी निर्वाणश्रीजी	सिलीगुड़ी
७१. साध्वी त्रिशलाकुमारीजी	विराटनगर (नेपाल)
७२. साध्वी पीयूषप्रभाजी	बेंगलुरु
७३. साध्वी कुंथुश्रीजी	बेल्लारी (उत्तर कर्नाटक)
७४. साध्वी कीर्तिलताजी	हासन
७५. साध्वी संगीतश्रीजी	साहुकारपेठ, चेन्नई (श्रावण भाद्रपद)
७६. साध्वी कंचनप्रभाजी	हैदराबाद
७७. साध्वी प्रमिलाकुमारीजी	कानपुर
७८. मुनिश्री रणजीतकुमारजी	आदर्शनगर, सवाईमाधोपुर
७९. मुनि रमेशकुमारजी	लुधियाना
८०. मुनि तत्त्वरुचिजी	रतलाम
८१. साध्वी काव्यलताजी	वाव

समणीकेन्द्र

१. समणी निर्वाणप्रज्ञाजी	नागपुर
२. समणी स्थितप्रज्ञाजी	नवसारी(पहले राजकोट में रहना)
३. समणी ज्योतिप्रज्ञाजी	जगदलपुर
४. समणी विनीतप्रज्ञाजी	इरोड
५. समणी चिन्मयप्रज्ञाजी	तेजपुर
६. समणी कमलप्रज्ञाजी	डोंबीवली
७. समणी अक्षयप्रज्ञाजी	किशनगंज (बिहार)
८. समणी विकासप्रज्ञाजी	कोयम्बतूर
९. समणी अचलप्रज्ञाजी	फिलहाल मुम्बई में रहें
१०. समणी शीलप्रज्ञाजी	केसिंगा
११. समणी पुण्यप्रज्ञाजी	टमकोर
१२. समणी कंचनप्रज्ञाजी	फिलहाल गुरुकुलवास में
१३. समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी समणी विपुलप्रज्ञाजी	लन्दन
१४. समणी परिमलप्रज्ञाजी समणी अमितप्रज्ञाजी	ह्यूस्टन
१५. समणी भावितप्रज्ञाजी समणी संघप्रज्ञाजी	ओरलैंडो
१६. समणी सन्मतिप्रज्ञाजी समणी जयंतप्रज्ञाजी	न्यूजर्सी
१७. समणी चैतन्यप्रज्ञाजी समणी उन्नतप्रज्ञाजी	मायामी
१८. समणी प्रसन्नप्रज्ञाजी समणी रमणीयप्रज्ञाजी	लन्दन

मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आचार्यवर द्वारा संबोधन प्राप्त श्रावक-श्राविकाएं

१. श्री बाबूलालजी कच्छारा रींछेड़-मुम्बई शासनसेवी

श्रद्धानिष्ठ श्रावक

१. श्री गणपतलालजी सिंघवी आशाहोली
२. श्री करणलालजी चींपड़ लावासरदारगढ़
३. श्री बच्छराजजी पारख चूरू-चेन्नई
४. श्री हरखचन्दजी भंडारी पेटलावद
५. श्री सुमेरमलजी पारख चूरू-चेन्नई
६. श्री चांदमलजी मेहर कूकरखेड़ा
७. श्री अर्जुनलालजी चावत सरेवड़ी
८. श्री मेघराजजी महनोत उदासर-भीलवाड़ा
९. स्व. मोहनलालजी सेठिया देवगढ़
१०. स्व. रामेश्वरदास जैन उमरा-हिसार
११. स्व. लाभचन्दजी सुराणा कोलकाता
१२. स्व. भंवरलालजी बैंगानी बीदासर
१३. श्री सोहनलालजी बाफणा राशमी
१४. श्री पुखराजजी दक भीम
१५. श्री भंवरीलालजी छल्लानी आरणी (महा.)
१६. श्री मांगीलालजी झाबक सूरत
१७. श्री बच्छराजजी बांठिया सूरत
१८. श्री अशोकजी डूंगरवाल राजनगर
१९. स्व. जेठमलजी कोठारी इन्दोर
२०. स्व. तोलारामजी बोथरा श्रीडूंगरगढ़
२१. स्व. राजमलजी सिंघवी आशाहोली
२२. स्व. घीसूलालजी कोठारी केलवा
२३. स्व. रणजीतमलजी गादिया इन्दोर

श्रद्धा की प्रतिमूर्ति

१. श्रीमती संतोषदेवी गुगलिया लसाड़ियाखुर्द
२. श्रीमती कमलादेवी धोका पाली
३. श्रीमती बसंतीदेवी मेहता आमेट-मुम्बई
४. श्रीमती आशादेवी बैद गंगाशहर
५. श्रीमती लाडबाई बाफना भाणा-मुम्बई
६. श्रीमती वरदीबाई बाबेल ठीकरवासकलां
७. श्रीमती कमलादेवी मेहता मजेरा
८. श्रीमती कैलाशदेवी ढीलीवाल चित्तौड़गढ़
९. श्रीमती संतोषदेवी बैंगानी बीदासर-दिल्ली
१०. श्रीमती संतोषबाई मूथा ब्यावर-चेन्नई
११. श्रीमती सोसरबाई ओस्तवाल गिलूण्ड
१२. श्रीमती जेठबाई सिसोदिया रायपुर(मेवाड़)
१३. श्रीमती कमलाबाई गुप्ता उदयपुर
१४. श्रीमती उमरावदेवी घोड़ावत लाडनूं-दिल्ली
१५. स्व. श्रीमती लक्ष्मीबाई हिंगड़ आमेट
१६. स्व. श्रीमती सुन्दरदेवी चोरड़िया छापर-कोलकाता
१७. स्व. श्रीमती लीलादेवी भंसाली अहमदाबाद
१८. श्रीमती सोसरबाई बाबेल मुरोली
१९. श्रीमती भूरीबाई लोढ़ा आमेट
२०. श्रीमती विमलादेवी चौधरी आमेट

अणुव्रत सेवी

१. श्री देवीलालजी बैरवा पुर
२. श्री नारायणलालजी बैरवा पुर
३. स्व.चौथमलजी बोथरा बीदासर
४. स्व. मांगीलालजी सुराणा दीवेर

१. कार्ला ग्रिट्स (करुणा) जर्मनी कल्याणमित्रा

मर्यादा महोत्सव के अवसर पर पूज्यप्रवर द्वारा संबोधन प्राप्त साधु-साध्वियां

१. स्व.मुनिश्री घासीरामजी शासनस्तंभ

शासनश्री

१. स्व. मुनि सोहनलालजी (चाड़वास)
२. स्व. मुनि मोहनलालजी (आमेट)
३. मुनिश्री राकेशकुमारजी
४. मुनिश्री वत्सराजजी
५. साध्वी सरोजकुमारीजी
६. साध्वी पानकुमारीजी'प्रथम' (श्रीडूंगरगढ़)
७. साध्वी फूलकुमारीजी (लाडनूं)
८. साध्वी नगीनाजी

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

९. साध्वी संघमित्राजी
१०. साध्वी मोहनकुमारीजी (राजलदेसर)
११. साध्वी जयश्रीजी
१२. साध्वी रतनकुमारीजी(सरदारशहर)
१३. साध्वी राजकुमारीजी (नोहर)
१४. साध्वी भीखांजी (लाडनूं)
१५. साध्वी सोहनांजी (छापर)

महासभा के नये अध्यक्ष व चीफ ट्रस्टी

धर्मसंघ की शीर्ष संस्था जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अधिवेशन पर श्री हीरालाल मालू (बेंगलुरु) अध्यक्ष व श्री कमल दूगड़ (कोलकाता) चीफ ट्रस्टी के रूप में निर्विरोध निर्वाचित हुए। इसी के साथ सात अन्य ट्रस्टी व तीन आरबिट्रेटर भी निर्वाचित हुए। वे इस प्रकार हैं--ट्रस्टी श्री विमल नाहटा, श्री संपत मादरेचा, श्री विवेक कठोतिया, श्री रोशनलाल सांखला, श्री राजकरण सिरोहिया, श्री पन्नालाल बैद, श्री सुरेन्द्र मित्तल। आरबिट्रेटर श्री कन्हैयालाल पटावरी (दिल्ली) श्री सिद्धराज भंडारी एवं श्री शैलेशभाई।

मर्यादा महोत्सव के मुख्य समारोह में नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री हीरालालजी मालू ने पदाधिकारियों के नामों की घोषणा की, वे इस प्रकार हैं--उपाध्यक्ष श्री विनोद बैद, श्री किशन डागलिया, श्री महेन्द्र धारीवाल, श्री विमल सुराणा, श्री सुकनराज परमार। महामंत्री-श्री विनोद चोरड़िया (कोलकाता), सहमंत्री-श्री भूपेन्द्र मूथा (बेंगलुरु), श्री बजरंग सेठिया। कोषाध्यक्ष-श्री सुरेन्द्र बोरड़, अमृत महोत्सव संयोजक श्री ख्यालीलाल तातेड़।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

११०००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. श्री डालमचन्दजी सुराना (चूरू-कोलकाता) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी नारीरत्न, श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती तारा सुराना, सुपुत्र एवं पुत्रवधू सुरेन्द्र-अनिता, नरेन्द्र-सरला, सुपौत्र देवकृष्ण, सुपौत्री अनुपमा-विनीत नाहटा, मीनाक्षी-राहुल भुतोड़िया, रजनी-मयंक जैन, चन्दना-कपिल पटवा एवं बसुधा सुराना द्वारा प्रदत्त।

५१००/- श्रीमती विजयादेवी बैद (धर्मपत्नी-स्व. माणकचन्दजी बैद, राजलदेसर-मुम्बई) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू कुलदीप-सुमन, राजेश-मीनू, सुपौत्र तेजप्रकाश, यश, सुपौत्री प्रज्ञा बैद द्वारा प्रदत्त।

दीक्षा समारोह संपन्न

२ फरवरी को परमपूज्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में दीक्षा समारोह परिसंपन्न हुआ। नवदीक्षितों के नाम इस प्रकार हैं--

१. समण गौतमप्रज्ञ	मुनि गणभक्त	३. मुमुक्षु ज्योति	साध्वी जिज्ञासाप्रभा
२. समणी मुदितप्रज्ञा	साध्वी मीमांसाप्रभा	४. मुमुक्षु हिमाक्षी	समणी हर्षप्रज्ञा

कार्यक्रम की विस्तृत रिपोर्ट देखें आगामी विज्ञप्ति में।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता है–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, आमेट
पो. चारभुजारोड-३१३ ३३२, जि. राजसमन्द (राजस्थान) फोन : ०९६८००५५३८१, ०९३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

प्रकाशन दिनांक : ४-२-२०१२

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**